इतिहासकार

स्व. किशोरी शरण लाल

(20 फरवरी 1920 - 11 मार्च 2002)

राजेश आर्य

05 मई 2020

इतिहासकार

स्व. किशोरी शरण लाल

ले० राजेश आर्य

स्व. (डॉ.) किशोरी शरण लाल (20 फरवरी 1920 - 11 मार्च 2002) एक सत्यनिष्ठ इतिहासकार थे। उनकी इतिहास दृष्टि और अध्ययन में बहुत गहराई थी। उन्होंनें मध्यकालीन भारत के इतिहास से सम्बन्धित कई इतिहास ग्रन्थों की रचना की। डॉ. एक्टन की एक प्रसिद्ध सुक्ति है, *"History, to be above evasion and dispute, must stand on documents, not on opinions."* अर्थात् *"विवाद से पर रहने के लिए, इतिहास मंतव्यों पर नहीं, ठोस स्रोतों पर आधारित होना चाहिए।"* इन शब्दों को व्यवहार में चरितार्थ करते हुए प्रो. लाल ने जो कुछ लिखा, सत्य लिखा, प्रमाणों और तथ्यों के आधार पर लिखा। वे किंवदंतियों के आधार पर नहीं, ठोस स्रोतों के आधार पर इतिहास लिखते थे।

सन् 1941 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से इतिहास विषय में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात उन्होनें भारत में मुस्लिम शासन काल को ही अपने शोध का क्षेत्र चुना और खीलजी वंश के इतिहास पर महाशोधप्रबंध लिखकर सन् 1945 में डी.फिल. की उपाधी प्राप्त की। इस विषय ने उन्हें मध्यकालीन स्रोतों को जानने और उनका गहन अध्ययन करने का अवसर प्रदान किया। सन् 1950 में उनका यह शोध प्रबंध *"History of the Khaljis"* शीर्षक प्रकाशित हुआ। इस इतिहास ग्रंथ ने उन्हें एक श्रेष्ठ शोधकर्ता और इतिहासकार के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया। एक श्रेष्ठ इतिहासकार के रूप में उनकी ख्याति चहुं ओर फैल गयी। देश-विदेश की कई शोध पत्रिकाओं में इस ग्रंथ की प्रशंसात्मक समीक्षाएं छपी। आज सत्तर वर्ष बीत जाने पर भी यह इतिहास ग्रंथ अपने विषय का सर्वाधिक प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है। उसे आज भी कई विश्वविद्यालयों में पाठ्यपुस्तक अथवा संदर्भ ग्रंथ की मान्यता प्राप्त है।

प्रो. लाल ने अपने अध्यापन कार्य सन् 1944 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में इतिहास के व्याख्याता के तौर पर शुरु किया। बाद में सन् 1945 से 1963 पर्यन्त उन्होंनें मध्य प्रदेश शिक्षा सेवा के अंतर्गत नागपुर, जबलपुर और भोपाल के राजकीय महाविद्यालयों में अध्यापन कार्य किया। मध्य प्रदेश में उन्होंने *'मध्य प्रदेश इतिहास परिषद्'* के सेक्रेटरी पद को भी सुशोभित किया। सन् 1963 में उनकी अगली शोधकृति *"Twilight of the Sultanate"* प्रकाशित हुई, जो उनकी शोध क्षमता का एक कीर्तिमान बन गयी। उसी वर्ष वे रीडर के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय में नियुक्त हुए और वहाँ के इतिहास विभाग में मध्यकालीन भारतीय इतिहास पढाना शुरु किया। पूरे दस वर्ष तक उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय में रीडर के नाते कार्य किया और साथ साथ उनका शोधकार्य भी अबाध चलता रहा। सन् 1973 में वे जोधपुर विश्वविद्यालय में इतिहास के प्रोफेसर बनकर गये। छह वर्ष बाद सन् 1979 में वे हैदराबाद विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष नियुक्त हुए। वहां से सन् 1983 में सेवानिवृत होकर वे दिल्ली वापस आ गए।

इस बीच उन्होंने सन् 1958 में इंडियन हिस्ट्री कॉंग्रेस के मध्यकालीन इतिहास विभाग की, सन् 1975 में पंजाब हिस्ट्री कॉंग्रेस की और सन् 1978 में राजस्थान हिस्ट्री कॉंग्रेस की अध्यक्षता की। सन् 1973 में दि इन्टरनेशनल बायोग्राफिकल सेन्टर, कैम्ब्रीज द्वारा *'Man of Achievement 1973'* के लिए उनका चयन हुआ, और सेन्टर ने उन्हें उनकी विशिष्ट सिद्धियों के लिए डिप्लोमा प्रदान किया। दि अमेरिकन बायोग्राफिकल इन्स्टिट्यूट, नॉर्थ केरोलिना द्वारा वे *'Man of the Year 1995'* के खिताब के लिए नोमिनेट हुए। सन् 1999 में दि इन्टरनेशनल बायोग्राफिकल सेन्टर, कैम्ब्रीज द्वारा वे *'International Man of the Millennium'* खिताब से सम्मानित हुए।

प्रो. लाल का नाम तब वर्तमानपत्रों में चर्चा का विषय बना जब सन् 1998 में वे *'भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्'* (ICHR) के सदस्य के रूप में, और बाद में सन् 2001 में वे इसी परिषद् के चेयरमेन नियुक्त हुए। श्रीराम जन्मभूमि विवाद में विश्व हिन्दू परिषद् का पक्ष लेने के कारण, एक ओर कुछ इतिहासकारों

और बुद्धिजीवियों की एक जमात ने ICHR में उनकी नियुक्ति का पूरजोर विरोध किया, तो दूसरी ओर अन्य इतिहासकारों, विद्वानों और बुद्धिजीवियों ने एक प्रसिद्ध इतिहासकार, मध्यकालीन भारतीय इतिहास के शोधकर्ता और वरिष्ठ प्रोफेसर होने के नाते उनकी नियुक्ति का हार्दिक स्वागत किया। यह वास्तव में एक खेदजनक बात थी कि किसी भी प्रकार की संस्थाकीय या सरकारी सहायता के बिना पिछले कई दशकों से मध्यकालीन भारतीय इतिहास में अनवरत शोधकार्य करने वाले एक कर्मठ, समर्पित और वरिष्ठ इतिहासकार का नाम कुछ द्वेषभाव से ग्रसित तत्वों द्वारा एक अनावश्यक विवाद में घसिटा गया! लेकिन अध्ययन-अध्यापन के प्रति अपने लगाव और इतिहास के क्षेत्र में शोधकार्य के प्रति अपनी निष्ठा के कारण वे अपने जीवन के अंत तक लेखन कार्य में व्यस्त रहे।

प्रो. के. एस. लाल के कार्य का सही मूल्यांकन तभी हो सकता है जब पिछले 170 वर्षों के दौरान, शुरुआत में ब्रिटिश इतिहासकारों के प्रभाव में और बाद में एक खास विचारधारा या पार्टी लाईन से परिचालित इतिहासकारों के एक गिरोह के प्रभाव में हुए मध्यकालीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के प्रारम्भ और विकास की पार्श्वभूमि में इसे देखा जाए। प्रो. लाल के शोधकार्य को दो भाग में विभाजित कर सकते है – 1945 से 1983, और 1983 से जीवन के अंत तक।

सन् 1973 में जब उनका शोध ग्रंथ *"Growth of Muslim Population in Medieval India"* (मध्यकालीन भारत में मुस्लिम जनसंख्या वृद्धि) प्रकाशित हुआ तब प्रो. लाल ने स्वयं को एकबारगी इतिहासकारों के उस संगठित गिरोह के विरुद्ध खड़ा पाया जो समकालीन स्रोतों की साक्षी को तोड़-मरोड़कर या दबाकर भारत में मुस्लिम शासनकाल को महिमामंडित करने के लिए विदेशी मुस्लिम आक्रमणकारियों और शासकों की ध्वंस-लीला और मतान्तरण की नीति को यत्नपूर्वक छिपाने में लगा हुआ था। प्रो. लाल ने अपने इस शोध ग्रंथ में मध्यकालीन स्रोतों की साक्षी के आधार पर बल और प्रलोभन के द्वारा मतान्तरण के फलस्वरूप मुस्लिम जनसंख्या में असामान्य वृद्धि का चित्र प्रस्तुत किया। इस पुस्तक के द्वारा प्रो. लाल ने भारतीय मुसलमानों के दिलो-दिमाग पर हावी इस भ्रम को तोड़ने की कोशिश की कि वे विदेशी आक्रमणकारियों की संतान हैं। प्रो.

लाल ने समकालीन स्रोतों के आधार पर सिद्ध किया कि भारतीय मुसलमानों की वर्तमान पीढ़ी की रगों में भारतीय रक्त बह रहा है। उनके पूर्वजों को बल या प्रलोभन से इस्लाम में मतान्तरित किया गया था। इस पुस्तक में प्रो. लाल ने मध्यकालीन भारत में मुस्लिमों की असाधारण जनसंख्या वृद्धि के कई कारण गिनाए है, यथा मुस्लिम आक्रमणकारी सेनाओं की भारत में सतत घुसपेठ, सीमा के उस पार से मुस्लिम सैनिकों की सतत भर्ती , मुस्लिम देशों से आनेवाले आव्रजकों का हार्दिक स्वागत, बलात धर्मांतरण, प्रलोभनों से धर्मांतरण, मुसलमानों का हिन्दू महिलाओं से बहुविवाह, और ज्यादा से ज्यादा बच्चे पैदा करने के पैगम्बर के आदेश से प्रेरणा, आदि। इस पुस्तक में प्रो. लाल ने इतिहास के जिस उपेक्षित तथ्य कि और पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है वह यह कि सतत जेहादी आक्रमणों में मुस्लिम आक्रांताओं को युद्ध केदियों (माले गनीमत) के रूप में असंख्य हिंदू पुरुष, महिलाएं और बच्चे मिलते थे, जिसे इस्लामिक परम्परा के अनुसार बाजारों में गुलाम के रूप में बेच दिए जाते थे। अंततः ये गुलाम भी मुस्लिम जनसंख्या वृद्धि में कारण बने। इस पुस्तक के प्रकाशन से एक तहलका मच गया और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय का संगठित गिरोह उनके विरोध में खड़ा हो गया, किन्तु उनके द्वारा प्रस्तुत तथ्यों की प्रामाणिकता को चुनौती देना संभव नहीं था। प्रो. लाल अकेले थे, किसी गुट या पार्टी के सदस्य नहीं थे, जबकि विरोधी गुट संगठित था, आक्रामक था। प्रो. लाल अकेले होते हुए भी सत्य की राह पर निर्भीकता से डटे रहे।

सन् 1984 में उन्होंने *"Early Muslims in India"* (भारत में प्रारम्भिक मुसलमान) प्रकाशित की। सन् 1988 में उन्होंने *"The Mughal Harem"* (मुगल अन्त:पुर) नामक शोधग्रन्थ प्रकाशित कर अलीगढ़ विश्वविद्यालय के इतिहासकारों द्वारा मुगलकाल के महिमामंडन के सुनियोजित प्रयत्नों की हवा निकाल दी। समकालीन स्रोतों पर आधारित इस ग्रंथ में प्रो. लाल ने मुगल हरम में विद्यमान विलासिता, स्वेच्छाचार, अनैतिक एवं षड्यंत्री जीवन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत कर दिया। ऐसी निर्भीक पुस्तकों के लिए प्रकाशक मिलना आसान नहीं था। ऐसे कठीन समय में *आदित्य प्रकाशन* और *वॉयस आफ इण्डिया* के

स्वामी **श्री सीताराम गोयल** सामने आए। बौद्धिक योद्धा श्री गोयल जी अपनी राष्ट्रवादिता, सत्यनिष्ठा एवं निर्भीक लेखन के कारण ऐसे लेखकों के केन्द्र बिन्दु बन गए थे, जो भारतीय राष्ट्रीय दृष्टिकोण को अपने शोध कार्यों द्वारा संसार के सामने लाना चाहते थे। फलत: सन् 1988 में *"The Mughal Harem"* से लेकर प्रो. लाल की बाद की सभी पुस्तकों का प्रकाशन सीताराम जी द्वारा किया गया। प्रो. लाल की इस पुस्तक श्रृंखला के पीछे गहन शोध के साथ-साथ एक दृष्टि है, जो भारत की मुस्लिम समस्या को उसकी समग्रता में प्रस्तुत करती है।

सन् 1990 में प्रकाशित पुस्तक "*Indian Muslims: Who Are They"* (भारतीय मुसलमान: वे कौन हैं?) में प्रो. लाल भारतीय मुसलमानों को इतिहास के दर्पण में अपनी वास्तविकता समझने का अवसर प्रदान करते हैं। इस पुस्तक में प्रो. लाल नें बार बार दोहराई जाती इस धारणा का खण्डन किया है कि भारत में मुस्लिम आक्रमणकारियों की सफलता का और हिन्दूओं का इस्लाम में धर्मपरिवर्तन का एक प्रमुख कारण हिन्दू समाज में प्रचलित जाति-प्रथा और ऊंच-नीच का भेद था। यदि यह सत्य है तो मध्य पूर्व, मध्य एशिया और उत्तर आफ्रिका के देशों में तो जाति-प्रथा प्रचलित नहीं थी, फिर भी उन देशों ने इस्लामिक आक्रमणों के आगे घुटने क्यों टेक दिए? भारत के संदर्भ में वास्तविकता यह है कि कई शताब्दियों तक कई मुस्लिम आक्रांताओं के सतत जेहादी अभियानों के बावजूद भारत में इस्लाम को तीव्र प्रतिकार का सामना करना पडा। इस्लाम या मौत - केवल दो विकल्प सामने होने के बावजूद हिन्दूओं ने प्रायः धर्मांतरण के प्रयासों का बहादुरीपूर्वक प्रतिकार किया। इस्लाम को जैसी सफलता अन्यत्र मिली थी वैसी भारत में नहीं मिली। यह पुस्तक बहुत लोकप्रिय हुई।

सन् 1992 में प्रकाशित "*The Legacy of Muslim Rule in India"* (भारत में मुस्लिम शासन की देन) शीर्षक पुस्तक में प्रो. लाल ने मध्यकालीन इतिहास लेखन में विकृत दृष्टियों का विवेचन करते हुए भारत में इस्लाम के प्रवेश से लेकर मुस्लिम शासन की समाप्ति तक के इतिहास का सब पहलुओं से विहंगम सिंहावलोकन प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक में *'मध्यकालीन भारत का इतिहास*

लेखन' पर एक पूरा अध्याय लिखा गया है, जिसमें तत्कालीन तवारिखों, पश्चिमी विद्वानों के योगदान, आधुनिक इतिहास लेखन, मार्क्सवादी इतिहास लेखन, हिन्दू स्रोत सामग्री की कमी, इतिहास स्रोत के रूप में इस्लामिक मजहबी साहित्य आदि मुद्दो की समीक्षा की है। इस पुस्तक में प्रो. लाल ने मध्यकालीन भारतीय इतिहास के सभी उपलब्ध स्रोतों का समीक्षात्मक परीक्षण किया है। उन्होंने इस तथ्य का भी स्वीकार किया है कि मुस्लिम साहित्य और इस्लाम के इतिहास के अध्ययन में योरोपीय विद्वानों, विशेष रूप से ब्रिटिश इतिहासकारों का योगदान अमूल्य है। प्रो. लाल ने मेजर एच. आर. रावर्टी, बेवरीज दम्पति, एलियट और डाउसन आदि के योगदान की मुख्त कण्ठ से प्रसंशा की है। साथ-साथ उनको हिन्दू स्रोत सामग्री की कमी भी खलती है; जो कुछ हिन्दू ऐतिहासिक साहित्य अस्तित्व में था, उसे मुस्लिम आक्रांताओं और शासकों ने व्यवस्थित ढंग से नष्ट कर दिया। इस पुस्तक में प्रो. लाल ने मार्क्सवादी इतिहास की भूमिका व चरित का भी मूल्यांकन किया है। वे लिखते है कि मार्क्सवादी इतिहासकार इतिहास के नग्न तथ्यों की अनदेखी कर या उन तथ्यों को विकृत रूप में प्रस्तुत कर भारत के मध्यकाल का एक गौरवशाली चित्र प्रस्तुत करते है। ये मार्क्सवादी इतिहासकार एक दूसरे की ऐतिहासिक शोधों(?) की तारीफ करते हुए समूह में कार्य करते है। प्रो. लाल लिखते है, *"Muslim rule in India remained Islamic basically with firm belief in the superiority and propagation of Islam as an article of faith. Atrocities committed by its followers in the name of Islam are often very graphically described by Muslim chroniclers as acts of piety and grace… Its history is soaked in blood of the supposed enemies of Islam. But all this is denied by Marxists, who always try to cover up the black spots of Muslim rule with thick coats of whitewash."* अर्थात् भारत में मुस्लिम राज्य, इस्लाम की उच्चता और विस्तार में विश्वास के साथ, अपने मूल चरित्र में *इस्लामिक* ही था। इस्लाम के अनुयायियों द्वारा इस्लाम के नाम पर किये गए अत्याचारों का सजीव चित्रण स्वयं मुस्लिम इतिहासकारों ने किया है... यह पूरा इतिहास इस्लाम के तथाकथित दुश्मनों (काफिरों) के रक्त में डूबा हुआ है। फिर भी ये मार्क्सवादी

इतिहासकार हंमेशा मुस्लिम शासन के काले धब्बों पर सफेद परत चढाने के प्रयास करते रहते है; उनको मुस्लिम शासकों के अत्याचारों को छुपाने या नकार ने में जरा सी भी शर्म नहीं आती।

प्रो. लाल का कहना है कि, क्योंकि सभी मध्यकालीन इतिहासकार इस्लामी साहित्य और कानून के विद्वान थे, उनमें से कई उलेमा मजहबी और राजनीतिक बाबतों में मुस्लिम शासकों के सलाहकार थे, तथा मुस्लिम विजेताओं और सुलतानों के कृत्यों के समर्थन में वे प्राय: कुरान के वचन और प्रोफेट की हदीसे प्रस्तुत करते थे, इसलिए अरबी और फारसी में लिखित मुस्लिम ऐतिहासिक साहित्य के अध्ययन के साथ साथ इस्लामी मजहबी किताबों के अध्ययन से ही भारत में मुस्लिम राज्य के असली चरित को अच्छी तरह से समझा जा सकता है। इस पुस्तक में प्रो. लाल ने मुस्लिम कट्टरवाद, भारत विभाजन, साम्प्रदायिक दंगे, राष्ट्रीय अखंडता और लघुमतिवाद की समस्याओं पर भी प्रकाश डाला है।

अगली कड़ी के रूप में सन् 1994 में प्रकाशित "*Muslim Slave System in Medieval India*" (मध्यकालीन भारत में मुस्लिम गुलाम प्रथा) पुस्तक में पहली बार मध्यकालीन भारत में मुस्लिम शासन के दौरान प्रचलित मुस्लिम गुलाम प्रथा का दस्तावेजीकरण किया गया है। इस पुस्तक में प्रो. लाल ने सप्रमाण बताया है कि इस्लाम के जन्म के साथ ही गुलामी प्रथा को समाज में स्थायी स्थान प्रदान किया गया और यह मजहब और संस्कृति का एक अविभाज्य अंग बन गई। अन्य व्यापारों की तरह इस्लाम ने बडे पैमाने पर गुलामों के व्यापार को भी मान्यता दी। प्रो. लाल ने यह भी सप्रमाण बताया है कि किस तरह विदेशी मुस्लिम आक्रमणकारी लाखों की संख्या में हिन्दू स्त्री, पुरुषों व बच्चों को बन्दी बनाकर ले जाते थे और उन्हें विदेशी बाजारों में कौड़ी के मोल गुलामों के रूप में बेच देते थे। समकालीन स्रोतों के आधार पर यह भी सिद्ध किया है कि इस्लाम के प्रारम्भिक काल से ही गैर-अरबी लोगों को गुलाम बनाकर बेचने का काम शुरू हो गया और 16वीं शताब्दी में यूरोपीय उपनिवेशवादियों को भी अफ्रीकी गुलामों की आपूर्ति मुस्लिम व्यापारी ही करते रहे। मुस्लिम जनसंख्या वृद्धि में इस गुलाम प्रथा का भी भारी योगदान रहा है।

मण्डल आयोग विवाद और सरकारी और शैक्षणिक संस्थाओं में अनुसूचित व वंचित जातियों के लिए आरक्षण के प्रश्न ने प्रो. लाल को इस ऐतिहासिक समस्या के मूल खोजने को प्रेरित किया। इस दिशा में उनके शोधकार्य का परिणाम सन् 1995 में *"Growth of Scheduled Tribes and Castes in Medieval India"* (मध्यकालीन भारत में अनुसूचित जनजातियों और जातियों का विकास) पुस्तक के रूप में आया। इस में प्रो. लाल ने यह सप्रमाण सिद्ध कर दिया है कि आज की अनेक अनुसूचित जातियां और जनजातियां उन क्षत्रियों की संतान हैं जो मुस्लिम शासन का प्रतिरोध करने के कारण उजाड़ी और दण्डित की गयीं। प्रो. मोहम्मद हबीब की अगुवाई में अलीगढ़ विश्वविद्यालय के इतिहासकारों ने यह धारणा फैलायी थी कि भारत में मुस्लिम आक्रमणकारियों की सफलता का एक प्रमुख कारण हिन्दू समाज में प्रचलित जाति-प्रथा और ऊंच-नीच का भेद रहा है, लेकिन प्रो. लाल को मध्यकालीन स्रोतों में कहीं भी जातिभेद के कारण मुस्लिम आक्रमणकारियों की सफलता का कोई उल्लेख नहीं मिला; उल्टे उन्होंने पाया कि तथाकथित निचली जातियों ने भी उच्च जातियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर मुस्लिम आक्रमणकारियों और उनके क्रूर शासन का कड़ा प्रतिरोध किया था। इस प्रतिरोध के कारण उन्हें भारी दमनचक्र भी झेलना पड़ा था; अपने गांवों को छोड़कर जंगलों में कठोर जीवन जीना पड़ा। उनकी वर्तमान सामाजिक और आर्थिक स्थिति मुगल शासन की ही देन है।

भारत में मुगल शासन काल का वंशानुसार और अलग-अलग पहलुओं से विवेचन करने के बाद प्रो. लाल ने सन् 1999 में "*Theory and Practice of Muslim State in India"* (भारत में मुस्लिम राज्य का सिद्धांत और व्यवहार) शीर्षक एक अद्‌भुत ऐतिहासिक ग्रंथ प्रकाशित किया। इस ग्रंथ की प्रस्तावना में वे लिखते है, *"मेरे पूर्व के शोधकार्यों में इस्लामिक मजहबी साहित्य में दी गई शिक्षाओं तथा आज्ञाओं और मुस्लिम आक्रांताओं तथा शासकों के क्रियाकलापों के बीच किसी प्रकार का सम्बन्ध स्थापित करने का कोई प्रयास नहीं किया गया था। सामान्यतः मध्यकालीन भारतीय इतिहास पर लिखने वाले इतिहासकार मुस्लिम तवारीखों और इतिहासों का ही स्रोत सामग्री के रूप में प्रयोग करते है।*

कुरान, हदीस, पैगम्बर के जीवन चरित, शरियत आदि इस्लामिक साहित्य के अध्ययन की प्रायः उपेक्षा की जाती है... लेकिन इस साहित्य का अध्ययन इस तथ्य को उद्घाटित करता है ***मुस्लिम आक्रांता तथा शासक अपने आप में क्रूर या कट्टर*** *(cruel or fanatical)* ***नहीं थे; वे गैर-मुस्लिमों के विरुद्ध कुरान और हदीसों में निहित दुष्ट विचारधारा का अनुसरण करने कारण ही वैसे (क्रूर या कट्टर) बन जाते थे।*** *इसी कारण इस्लाम के इतिहास के अध्ययन के लिए उसके नैतिक (ethical) और आध्यात्मिक (spiritual) साहित्य का अध्ययन बहोत महत्वपूर्ण बन जाता है... यह मजहबी साहित्य भूतकाल की कोई गई गुजरी चीज नहीं है; इनकी शिक्षाएं वर्तमान में भी लागू की जा रही है। जेहाद, काफिर और मुशरिक जैसे घृणाजनक शब्द आज भी उतने ही प्रचलित है जितने वे प्रथम बार चौदह सौ साल पूर्व प्रयोग किए गए थे तब थे... इसलिए भारत में मुस्लिम राज्य के अध्ययन में इस्लाम के सिद्धांत (theory) और उसके व्यवहार (practice) दोनों का अध्ययन महत्वपूर्ण बन जाता है। सिद्धांत भाग को हम कुरान, हदीस और पैगम्बर के जीवनचरितों में पाते है; व्यवहार भाग को इस्लामिक तवारिखों में वर्णित मुस्लिम शासकों के कृत्यों में देखा जा सकता है"।* अर्थात् मुस्लिम शासकों की नीतियों और कार्यों को आप तब तक नहीं समझ सकते जब तक कि आप कुरान, हदीस और शरीयत को न समझ लें, क्योंकि वे इस्लाम की विचारधारा के मूलस्रोत हैं और प्रत्येक मुस्लिम शासक ने अपने समय की परिस्थितियों में इसी मजहबी विचारधारा को क्रियान्वित करने और कराने का प्रयास किया।

यह पुस्तक तीन भाग में विभाजित है: प्रथम भाग मध्यकालीन भारत में मुस्लिम राज्य, उसके कर्तव्य, आय और खर्च, ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में जेहाद और न्याय व्यवस्था सम्बंधित है। इस्लामिक राज्य के असली चरित को सही परिपेक्ष्य में समझने के लिए जेहाद को समझना अनिवार्य है। इस्लामिक मजहबी किताबों में गैर-मुस्लिमों के विरुद्ध युद्ध को जेहाद कहते है। इस्लामिक मजहबी किताबों के आधार पर प्रो. लाल लिखते है, *"Jihad is the highest duty of a Muslim / Jihad means attacking, killing, enslaving or converting non-Muslims even when they have done no harm to the Muslims, even when*

they are unarmed। Jihad is waged for the sake of Allah; war and worship in His service are the same। Shirking Jihad is the greatest sin; obtaining glory through Jihad is the highest grace." अर्थात् *"जेहाद एक मुसलमान का सर्वोच्च कर्तव्य/फर्ज है। जेहाद का मतहब होता है चाहे गैर-मुस्लिमों ने मुसलमानों की कोई हानी न की हो, चाहे वे शस्त्रों से सज्ज न हो तो भी उन (गैर-मुस्लिमों) पर हमला करना, उनकी हत्या करना, उनको गुलाम बनाना या उनका इस्लाम में धर्मांतरण करना। जेहाद अल्लाह के लिए लडी जाती है। उनकी (अल्लाह की) सेवा में किया गया युद्ध और इबादत दोनों एक ही है। जेहाद से दूर भागना सबसे बडा पाप है। जिहाद करते हुए महीमा प्राप्त करना (अल्लाह की) सर्वोच्च कृपा है।* (पृ.9) प्रारम्भिक जेहाद अरेबिया के मूर्तिपूजकों, यहूदियों और ईसाईयों के विरुद्ध लडी गई थी। पश्चात यह जेहाद अरेबिया की सीमाओं से बाहर निकलकर उन उन देशों के विरुद्ध लडी गई जहां जहां मुस्लिम जेहादी अपने मजहब और राज्य का विस्तार करने गए। यह जेहाद शताब्दियों के बाद आज भी चालु है। भारत के संदर्भ में प्रो. लाल लिखते है, *"Muslim invaders and rulers had come not only to conquer but also to impose the Islamic religion… Islam is an imposition on India।"* अर्थात् *"मुस्लिम आक्रांता और शासक न केवल (भारत को) जीतने आए थे, बल्कि (भारत पर अपना) इस्लामिक मजहब थोपने आए थे... इस्लाम भारत पर थोपी हुई चीज है।"* (पृ.6) हसन निजामी, मिन्हाज सिराज, जियाउद्दीन बरनी, शम्स सिराज अफिफ, फरिश्ता आदि मध्यकालीन मुस्लिम इतिहासकार इस ऐतिहासिक तथ्य के साक्ष्य है। पुस्तक का दूसरा भाग राजनीति विषयक है। प्रो. लाल का स्पष्ट मंतव्य था कि आधुनिक भारत में भी मुस्लिम राज्य अभी खत्म नहीं हुआ है; इस्लामिक कानूनों और अपनी अलगाववादी पहचान के कारण भारत के मुसलमान आज भी भारतीय राज्य के अंदर एक अलग राज्य बनाए हुए है। इस पुस्तक के तीसरे और अंतिम भाग में प्रो. लाल ने अब तक की अपनी सभी पुस्तकों की आलोचनाओं का तर्कयुक्त उत्तर देने का प्रयास किया है। यह खंड

आजकल इतिहास लेखन के क्षेत्र में चल रही बहस के मुद्दों को जानने के लिए बहुत उपयोगी है।

सन् 2001 में प्रो. लाल ने दो खण्डों में *"Historical Essays"* (ऐतिहासिक निबंध) शीर्षक से अपने प्रमुख शोध निबंधों का संकलन प्रकाशित किया। इनमें से प्रथम खण्ड इतिहास की व्याख्या, इतिहास लेखन का उद्देश्य, मध्यकालीन भारत के आधुनिक इतिहासकार, इतिहास लेखन शास्त्र और मध्यकालीन भारत के इतिहास लेखन में अपनाई गई विभिन्न दृष्टियों के विवेचन को समर्पित है। दूसरे खण्ड में उन्होंने मध्यकालीन भारत के विभिन्न चरणों और पहलुओं के बारे में समय-समय पर लिखे गए निबंधों को प्रस्तुत किया है।

अब हम पहुंच जाते हैं प्रो. लाल की अंतिम कृति *"Return to the Roots: Emancipation of Indian Muslims"* (मूल की ओर वापसी: भारतीय मुसलमानों की मुक्ति) पर। इस्लामी विचारधारा और मुस्लिम मानसिकता का विश्लेषण करते हुए भारत की मुस्लिम समस्या का स्थायी हल प्रस्तुत करती यह पुस्तक प्रो. लाल की साठ वर्ष लम्बी शोध यात्रा का निचोड़ है, जिसे उनकी एक पूर्व प्रकाशित पुस्तक *"Indian Muslims: Who Are They"* (भारतीय मुसलमान: वे कौन हैं?) के पूरक के रूप में पढा जा सकता है। इस ग्रंथ में इतिहासकार प्रो. लाल बताते हैं कि दुनिया के अन्य भागों में अपनी सफलता की तुलना में इस्लाम भारत का 'इस्लामीकरण' करने में असफल रहा। शेख अहमद सरहिन्दी और शाह वली उल्लाह जैसे कट्टर उलेमा के भारी प्रयासों के बावजूद भारतीय मुसलमानों का पूर्ण 'अभारतीयकरण' नहीं हो सका और भारतीय मुसलमानों के सामने आज भी पहचान का संकट खड़ा है। वे एक गहरे अंतरद्वंद्व से गुजर रहे हैं। इस अंतरद्वंद से उबरने का एक ही उपाय है कि वे अपनी हिन्दू जड़ों को पहचाने। प्रो. लाल लिखते हैं कि इस्लाम-पूर्व के इतिहास को स्वीकार करने पर ही मुस्लिम समाज मजहबी कट्टरवाद से मुक्ति पा सकता है। तभी वह स्वयं और पूरा विश्व शांति के साथ जी सकता है। इस पुस्तक के अंतिम अध्याय में प्रो. लाल ने बताया है कि अपनी जड़ों की ओर वापस लौटने से भारतीय मुसलमान घाटे में नहीं, लाभ में ही रहेंगे।

डॉ. एन्ड्रू बोस्टम द्वारा सम्पादित और सन् 2005 में अमरिका से प्रकाशित *"The Legacy of Jihad: Islamic Holy War and the Fate of Non-Muslims"* (जेहाद की विरासत: इस्लामिक पवित्र युद्ध और गैर-मुस्लिमों का भाग्य) में भी प्रो. के. एस. लाल के *'Muslims Invade India', 'Jihad Under The Turks and Jihad under the Mughals', 'The Origins of Muslim Slave System', 'Enslavement of Hindus by Arab and Turkish Invaders'* और *'Slave Taking During Muslim Rule'* शीर्षक शोध निबंध समाविष्ट किए गए है।

प्रो. के. एस. लाल लिखते है, *"History of the Khaljis पर मेरे शोधकार्य के प्रारम्भिक वर्षों के दौरान, फारसी भाषा सीखने पर ज्यादा महत्व दिया जाता था। हमारे शोधकार्य की मुख्य उपादान सामग्री ज्यादातर इसी भाषा में उपलब्ध थी। कुरान, हदीस और अन्य मुस्लिम मजहबी साहित्य के अध्ययन का आग्रह नहीं रहता था। उस समय इसे पढने और इस्लाम के मुख्य मुख्य पहलुओं से अपने आपको परिचित करने का कोई सूचन भी नहीं करता था। उल्टे, इस बात पर जोर दिया जाता था कि मुस्लिम शासकों और सरदारों के क्रियाकलापों का इस्लाम से कोई सम्बन्ध नहीं था। जैसा कि हमें प्रोफेसरों के लेक्चर्स और पुस्तकों में कहा जाता था, हम सोचते थे कि हिन्दूओं के विरुद्ध जियाउद्दीन बरनी जैसे मुस्लिम उलेमाओं के द्वेषपूर्ण शब्द एक बिमार मस्तिष्क की भडास थी और महमूद गजनवी और अलाउद्दीन खिलजी जैसे मुस्लिम आक्रांताओं और शासकों के कृत्य का इस्लाम से कोई लेनादेना नहीं था, लेकिन मूल स्रोत सामग्री कुछ और ही बयान करती थी। [इन मूल स्रोतों में] हिन्दूओं के विरुद्ध अपनी भडास में तवारिखकारों द्वारा कुरान की आयतें बार-बार उद्धृत की गई है। बरनी इस्लामिक शास्त्र का विद्वान था। गजनी का महमूद कुरान का विद्वान था और दिल्ली की जनता के सामूहीक नरसंहार का अपना उद्देश्य पूर्ण होने पर आमीर तैमूर ने अल्लाह के सामने सजदा किया था। मुस्लिम शासकों के कृत्यों और इस्लामिक शास्त्र के मध्य सीधा सम्बन्ध था। बाद के वर्षों में जब मैं कुरान और हदीसों के अध्ययन द्वारा इस्लाम के मूल सिद्धांतों से परिचित हुआ, तब मुझे इस वास्तविकता का पता चला कि मौलानाओं (और अधिकतर सूफीयों) ने जो कुछ*

कहा था वह एक बीमार या असंतुलित मस्तिष्क की उपज नहीं, परंतु पूर्ण रूप से इस्लामिक मजहबी किताबों पर आधारित था। सारा दोष सुल्तानों के दरबारी उलेमाओं पर डालने के बजाए, मुस्लिम आक्रांताओं और शासकों के कृत्यों, समकालीन तवारीखकारों के लेखन और इस्लामिक मजहबी किताबों की शिक्षाओं को जोडती कडीयों को ढूंढने पर ही ऐतिहासिक सत्य और स्पष्ट होता है।" (*Theory and Practice of Muslim State in India,* पृ. 11-12)

प्रो. के. एस. लाल ने अयोध्या विवाद के ऐतिहासिक पक्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। अपनी इस भूमिका के कारण वे बाबरी मस्जिद के समर्थित इतिहासकारों(?) की आंख का कांटा बन गए थे और फलतः उनके विरुद्ध अपप्रचार की आंधी खड़ी कर दी गयी थी। *दिल्ली हिस्टोरियंस गृप* द्वारा सन् 2001 में प्रकाशित पुस्तिका "*Communalisation of Education: The History Text-Books Controversy*" में इरफान हबीब द्वारा प्रो. लाल *"आर.एस.एस. का पसंदीदा इतिहासकार"* और *"आर.एस.एस. का प्रवक्ता"* घोषित किए गए! और श्री सीताराम गोयल का प्रकाशन गृह *Aditya Prakashan "आर.एस.एस. का प्रकाशन गृह"* बन गया! भारतवर्ष के प्रति द्वेष भाव से लिखी गई कैथरिन मेयो की पुस्तक *"Mother India"* के बारे में गांधी जी ने एक बार कहा था, *"It is the report of a drain inspector sent out with the one purpose of opening and examining the drains of the country to be reported upon, or to give a graphic description of the stench exuded by the opened drains."* (इतिहासकार!) इरफान हबीब की नजरों में भी प्रो. लाल की दो शोधपूर्ण पुस्तकें *"Legacy of Muslim Rule"* और *"Muslim Slave System"* ड्रेन इंस्पेक्टर्स रिपोर्ट्स *(drain inspector's reports)* से अधिक कुछ नहीं है!

वास्तव में *" यह पूरी पुस्तिका [Communalisation of Education: The History Text-Books Controversy] मार्क्सवादी इतिहासकारों की योग्यता, शैली, मानसिकता और उद्देश्यों का प्रतिनिधि नमूना है... आत्म-प्रशंसा, अहंकार, कुतर्क, मिथ्या आरोप और राजनीतिक सक्रियता का प्रदर्शन करती यह पुस्तिका आम जनता के बीच प्रचार के लिए नहीं तैयार की गई थी। इसे भारतीय*

इतिहास कांग्रेस में भाग लेने वाले इतिहासकारों, विद्वानों और प्राध्यापकों के बीच प्रसारित किया गया था... यह पुस्तिका किन्ही 'साम्प्रदायिक शक्तियों' की छीछलेदार से आरम्भ होकर एक सुर में निंदा और लांछन के बिना एक पृष्ठ, बल्कि एक पाराग्राफ भी चलने में असमर्थ प्रतीत होती है। अर्थात् किसी प्रस्थापना को केवल तथ्यों, तर्कों के आधार पर गलत साबित कर सकना या अपनी बात को सही साबित कर सकना – इस गुण से प्रायः मार्क्सवादी इतिहासकारों का परिचय नहीं रहा है।" (डॉ. शंकर शरण, *'भारत में मार्क्सवादी इतिहास लेखन'*, पृ.115,119)

प्रो. के.एस. लाल की उक्त दो शोधपूर्ण पुस्तकों के लिए इरफान हबीब द्वारा "ड्रेन इंस्पेक्टर्स रिपोर्ट्स" शब्दावली का प्रयोग करना मार्क्सवादी इतिहासकारों के बौद्धिक खालीपन, अहंकार और तर्कों और तथ्यों से उत्तर देनें में अपनी असमर्थता या अयोग्यता का परिचायक है।

प्रो. किशोरी शरण लाल सही अर्थों में निर्भीक शोधकर्ता, सत्यनिष्ठ इतिहासकार और कर्मयोगी थे। इतिहास के क्षेत्र में अपनी साठ वर्ष लम्बी अखण्ड बौद्धिक साधना में से उपजी विपुल शोध सामग्री वे हमारे लिए छोड़ गए हैं। यह सामग्री महज बौद्धिक विलास की वस्तु नहीं है, बल्कि वर्तमान और भविष्य में रास्ता दिखाने वाली मूल्यवान निधी है।

□■□

प्रो. किशोरी शरण लाल की लेखन यात्रा

History of the Khaljis (1950)

Twilight of the Sultanate (1963)

Studies in Asian History (Ed. 1969)

Growth of Muslim Population in Medieval India (1973)

Early Muslims in India (1984)

The Mughal Harem (1988)

Indian Muslims: Who Are They (1990)

The Legacy of Muslim Rule in India (1992)

Muslim Slave System in Medieval India (1994)

Growth of Scheduled Tribes & Castes in Medieval India (1995)

Theory and Practice of Muslim State in India (1999)

Historical Essays (2001)

Return to the Roots (2002)